मानवीय संवेदना के विविध रूप

Dr. J. R. Jadav
Associate Professor in Hindi
Smt. B. V. Dhanak College,
Bagasara

मनुष्य जीवन में अलग-अलग प्रकार के भाव तथा संवेदनाएँ होती है। मानव के अंतर्मन सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं पवित्र भावना संवेदना और प्रेम है। प्रेम और संवेदना भले ही किसी समस्या का समाधान नहीं है, परंतु ये वे भाव है, जो मनुष्य को जीवन में उन समस्याओं के साथ अंत तक लड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। ये वे भाव है जो मौन के साथ स्वीकृति देते हैं। 'संवेदना'का अर्थ है-'समान वेदना' एक व्यक्ति जो दूसरे की वेदना को अपनी समझकर उसका अनुभव कर सके। दूसरों की पीड़ा को अगर महसूस ना कर सके तो वह मनुष्य मनुष्य कहलाने के लायक नहीं रहता। मनुष्य जीवन में अलग-अलग प्रकार के भाव तथा संवेदनाएँ होती है। उन सभी को साहित्य के माध्यम से समाज तथा लोक जीवन के सामने स्पष्ट करना ही साहित्य की सबसे बड़ी सार्थकता मानी गई है। साहित्यकार के माध्यम से समाज में व्याप्त इन समस्याओं को पाठक बड़ी ही निकटता से देखता है और उस पर मनन करता है। यह संवेदना और वेदना ही सह अनुभूति है जो पाठक में अभिव्यक्त होती है और पाठक उससे अभिभूत प्रतीत होता है।

संवेदना एक ज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा किसी उपस्थित उद्दीपन का सरलतम ज्ञान होता है ।संवेदना का अर्थ वस्तु बोध की प्रक्रिया में मस्तिष्क की विशिष्ट उत्तेजना का भाव विह्वल हृदय से निसृत विशिष्ट अर्थ दृष्टि। किसी के लिए इतनी करुणा की उसके दु:ख एवं पीड़ा को देखकर स्वयं भी वैसा ही भाव अनुभव करना ही संवेदना है। साहित्य में संवेदना के अर्थ को सीमित नहीं रखा गया है। संवेदना के अर्थ को विस्तार से देखने का प्रयास किया गया है। मानवीय संवेदना की बात करें तो वह मात्र ज्ञानेंद्रिय के अनुभव तक सीमित न रहकर मानव हृदय की गहराइयों में छिपे भाव जैसे की करुणा, दया, प्रेम, उदारता, सहानुभूति आदि तक माना गया है। संवेदना का सामान्य अर्थ हृदय में होने वाली समान पीड़ा के अर्थ में होना चाहिए।

संवेदना मनुष्य की जीवंतता चैतन्यता और सजगता का आधार बिंदु है। "किसी व्यक्ति के शोक, दुख कष्ट या हानि के प्रति सहानुभूति को संवेदना कहते हैं"।

"संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभम में संवेदना के लिए अनुभव करना,जताना, प्रकट करना, शब्दार्थ दिए गए हैं।" संविधान के विभिन्न अर्थो से यह सिद्ध होता है कि किसी कष्ट दुख संकट आदि को देखकर या सुनकर मानस पटल पर उत्पन्न सयोग भावन को ही संवेदना नाम दिया गया है। मनुष्य अपने भाव दूसरे के भावों के आदान-प्रदान से अपने हर्ष को बढ़ाता है और दूसरों के दु:ख को बाँटता है। जब मनुष्य के दु:ख या कष्ट किसी के सहयोग मंत्र से कम होते हैं तब उसके मुखारबिंद से निकले शब्द उसकी संवेदना का प्रवाह करते हैं। संवेदना ज्ञानेंदियों के द्वारा सहज अनुभूति होती है या यह भी कहना उचित होगा की संवेदना व्यक्ति द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव होती है और संवेदना प्रत्येक मनुष्य में होती है । सामान्य मनुष्य से कवि की संवेदना अत्यंत उच्चतर होती है जो की धरातल के निम्नस्तर पर उतरकर उच्च कोटि की दर्शनिकता को अपने शब्दों द्वारा दृष्टिगत करती है। संवेदना सर्वप्रथम मानस धरातल पर जन्म लेती है अर्थात् मन के ही आधार पर किसी व्यक्ति की संवेदना उत्पन्न होती है । यह कहा जा सकता है कि संवेदना मनोविज्ञान से संबंध रखती है। "संवेदना उत्तेजना के संबंध में देह रचना की सर्वथा सचेतन प्रक्रिया है, जिसमें हमें वातावरण की ज्ञानोपलब्धि होती है।"

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संवेदना को दु:ख या कष्ट से जोड़ते हुए इस प्रकार परिभाषित किया है-"संवेदन शब्द अपने वास्तविक या वास्तविक दु:ख पर कष्टानुभव के अर्थ में आया है। मतलब यह है कि अपनी किसी स्थिति को लेकर दु:ख का अनुभव करना संवेदना है। "संवेदना चेतन की वह अवस्था है जो किसी एक इंद्रिय के उत्तेजित होने पर उत्पन्न होती है जिसका तात्विक विश्लेषण नहीं होता है।"। जिस प्रकार दूसरों के दु:ख, कष्ट इत्यादि को देखकर मानव सहानुभूति के आधार पर उसकी सहायता करने की हिम्मत जुटा लेता है उसी प्रकार

साहित्य में भी संवेदनाओं के आधार पर रचना करना और उस रचना के लिए सामाजिक संघर्षों की उठा पटक करना उसे रचनाकार के लिए साहसपूर्ण कार्य है।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक जितने साहित्यकार एवं रचनाकार हुए जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हमारे हिंदी साहित्य जगत को प्राण वायु प्रदान की। इसलिए वेदना, संवेदना तत्त्व को समझने के लिए और उसकी व्याख्या करने के लिए यदि यह कहा जाए की पद्यों के माध्यम से ही मानवीय वेदना, संवेदना को स्पष्ट किया जा सकता है तो यह सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है। हम साहित्य का सहारा लेते है तो हमें गद्य एवं पद्य दोनों को आधार बनाना पड़ेगा और यदि हम इन दोनों को किसी तत्त्व का आधार बनाते हैं तो उस तत्त्व की पूर्ण व्याख्या करने में सफल होंगे। यदि कोई विचार गद्य में स्पष्ट नहीं सिद्ध होता है तो हमें निश्चित रूप से पद्य का सहारा लेना चाहिए और कुशल विचारक, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, एवं सामाजिक व्यक्ति इन दोनों के माध्यम से अपने विचारों को लोगों तक सरलता से पहुंचाने में सफल होते हैं। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में कोई साहित्यकार हुए जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीति, विडंबना, नारी विमर्श, नई संवेदना, धार्मिक कटुता, बेरोजगारी, मानसिक कुंठा, और सामाजिक कुरूपता को स्पष्ट करने में सफलता प्राप्त की है।

संवेदना एक ज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा किसी उपस्थित उद्दीपन का सरलतम ज्ञान होता है। मानवीय संवेदना एक सार्वभौमिक मनोभाव है। जिसका उद्देश्य केवल मानव समाज का नहीं, अपितु समस्त जीवों का हित है। हिंदी कथाकारों ने अपने लेखन में इन्हीं मानवीय संवेदनाओं को दर्शाने का प्रयास किया है। साहित्य में संवेदना से अभिप्राय है वह अनुभूति प्रवणता जो सूक्ष्माति सूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता से पूरित हैं।आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने संवेदना के विविध रूपों की चर्चा करते हुए लिखा है-"सुख और दु:ख की मूल अनुभूति ही विषय भेद के अनुसार प्रेम, हास, उत्साह, क्रोध, भय, करुणा, घृणा इत्यादि मनोविकारों का जटिल रूप धारण करता है।

हिंदी साहित्य में संवेदना के मुख्य आयाम का विवेचन हम इस प्रकार कर सकते हैं। मन में होने वाले राष्ट्र के प्रति भाव प्रभाव का संदर्भ राष्ट्रीय संवेदना है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसमें अपने राष्ट्र के प्रति गर्व और गौरव का भाव न हो। राष्ट्र की उन्नति में प्रसन्नता और राष्ट्र पर आए हुए संकट में दु:खी होना स्वाभाविक होता है यह भाव राष्ट्र अनुभूति कही जा सकती है। जब व्यक्ति राष्ट्रीय भाव से आंदोलित होता है तो राष्ट्रीय संवेदना का स्वरूप मन को तरल करता है।

राष्ट्रीय संवेदना समाज, व्यक्ति से भी सफल और विस्तृत है। साहित्यकार पूरे देश को प्रसन्न देखना चाहता है। राष्ट्र में व्याप्त विसंगतियों या विषमताओं में साहित्यकार की आत्मा चित्कार करने लगती है। साहित्यकार की साहित्य धर्म में प्रवाहित संवेदना जनमानस को आंदोलित कर राष्ट्रीय भावना से वोट प्राप्त कर देती है। राष्ट्रीय संवेदना के आधार पर उसे प्रभावी रूप प्रदान करते हैं। मानव जीवन की अंतरतम सर्वाधिक पवित्र भावना प्रेम और संवेदना अपना अलग-अलग स्थान स्थापित करती है। एनीमी संवेदना प्रेम से उच्च कोटि की भावना समझी जा सकती है और अपना स्थान उच्च रखती है। सहानुभूति के दो ही शब्दों से व्यक्ति को असीम संतुष्टि प्रदान करने में सहायक होता है, सहानुभूति के माध्यम से दु:ख एवं कष्ट का निवारण तो नहीं, परंतु दु:खी व्यक्ति के साथ खड़ी हुई भावना प्रदर्शित करती है। संवेदना के माध्यम से पाषाण हृदय को भी कोमल एवं मृदु भाव प्रदान किया जा सकता है। संवेदना के माध्यम से ही किलस्ट को सरल बनाया जा सकता है एवं संवेदना के माध्यम से वैमनस्यता को आत्मीयता या प्रेम में परिवर्तित किया जा सकता है। संवेदनाहीन मनुष्य, मनुष्य नहीं पशुवत्त प्रवृत्ति धारण कर लेता है और सामाजिक सिद्ध होता है। संवेदना शब्द साहित्य और मनोविज्ञान दोनों ही विषयों के ग्रहित शब्द है, परंतु दोनों ही विषयों में भिन्न अर्थ को प्रस्तुत करने वाले हैं। मनोविज्ञान में संवेदना को अंग्रेजी मे 'सेंनशन' शब्द से उत्पादित मानते हैं । मनोविज्ञान में इस शब्द का अर्थ ज्ञानेंद्रिय का अनुभव है। वही साहित्य में इस शब्द को इसी अर्थ में सीमित नहीं मानते क्योंकि साहित्य में संवेदना वह भी मानवीय संवेदना व्यापक अर्थ बोध कराने में सक्षम है। संवेदना मनुष्य के मन के भावों की गहराइयों से उत्पन्न होती है। संवेदना मनुष्य की मन: स्थिति का एक आंदोलन है जो संवेदनशील मनुष्य के व्यक्तित्व का परिचय कराती है।

आदिकाल में गद्य अथवा पद्य में वीरता संवेदना का मुख्य विषय था, वही भक्ति काल में भक्ति, प्रेम, दर्शन एवं आध्यात्मिक संवेदना प्रमुख थी। उसके बाद रीतिकाल में मातृ प्रेम और मात्र प्रेम ही संवेदना का मुख्य विषय था, यह कहा जा सकता है कि काल, स्थिति एवं समय के अनुसार यदि व्यक्ति साहित्य परिवेश इत्यादि परिवर्तित होते हैं, तो व्यक्ति की मानसिकता एवं मानवीय संवेदना में भी परिवर्तन प्रदर्शित होता है।

युग परिवेश एवं जीवन दर्शन के कारण हमारी सौंदर्य चेतना एवं संवेदना के विटप में नई शाखाएं निरंतर निकलती रहती है, किंतु कुल मिलाकर सौंदर्य भावना एवं मानवीय संवेदना मनुष्य की आदिम एवं अमूल्य ख्याति है। आज साहित्य की धरती पर न जाने कितने वाद फल फूल रहे हैं। हमारा उन वादों से सैद्धांतिक विरोध तो हो सकता है, परंतु यदि हम उसके साहित्य का पर्यावलोकन करते हैं तो उसमें बिना रमे नहीं रह सकते हैं।

साहित्यकार अपने साहित्य को कालजयी बनाने हेतु अपनी ऊर्जा, इतिहास बोध, संस्कृत ज्ञान की विरासत और सामाजिक यथार्थ को पकड़ने के कौशल का प्रयोग करता है। ऐसा साहित्य चाहे गद्य हो या पद्य, समय के थपेड़े अस्तित्वहीन नहीं बना सकते। हम अपने देश की संस्कृति से यदि रामायण और महाभारत को निकाल दे तो देश का अस्तित्व प्रभावित हो सकता है क्योंकि रामायण के पात्रों के आधार पर प्रत्येक घर का व्यक्ति अपना आदर्श व्यक्तित्व प्रस्तुत करने का प्रयास करता है एवं महाभारत के कुरुक्षेत्र में दिए गए गीता ज्ञान को ही जीवन दर्शन के रूप में आत्मसात् करना उचित होता है। "वसुदेव कुटुंबकम्" की भावना पूरे विश्व में यदि कहीं प्रमाणित है, तो वह मात्र भारत है और यह भावना हमारी भारतीयता को स्थापित करती है। मानवीय संबंधों की अतिरिक्त प्राणियों, पशु पक्षियों एवं जड़ प्रकृति की वस्तुओं को भी हमारे साहित्य से जोड़ने का कार्य करती है। हमारी संवेदना को व्यापकता, चेतना को विस्तार और करुणा की भावना को इन्हीं विचारों के आधार पर प्राप्त होता है। एक साहित्यकार के लिए सामाजिक और अशांति विध्वंस, विघटन और उद्वेलन बड़ी वेदना के रूप में प्रकट होता है। इस वेदना को साहित्यकार अपनी ताकत ऊर्जा बनाकर अपने साहित्य में शांति, संयोजन, और समरसता स्थापित करने का पूर्ण प्रयास करता है।

साहित्यकार संवेदनशील मनुष्य होता है वह समझ में रहता है। सामाजिक परिस्थितियों उसे प्रभावित करती है। अतः वह अपनी अभिव्यक्ति के लिए साहित्य की किसी भी विधा को क्यों न चुने, उसमें युग चेतना के स्वर उभर ही आते हैं। किसी विशेष युग की चेतना में भी कोई धाराएं पाई जाती है। इसका कारण यह है कि एक ही युग में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा वह उनकी निजी संवेदना अनुरूप ग्रहण की जाती है। संविधान किस तारों में विविध स्टार होने के भी कोई कारण है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, संस्कृत परिस्थितियों का प्रमुख है। लेखक की एक अलग संवेदना होती है, जिसके द्वारा वह साहित्य में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। साहित्य को मानव चेतना की अभिव्यक्ति मानने पर हमारी अनुभूति की सधनता का संबंध पद्य से और चिंतन की दुरुहता का संबंध गद्य से ठहरता है।

समाज जीवन का दर्शन करने वाले उपन्यास सामाजिक उपन्यास वर्ग में रखे जाते हैं। महावीर मल लोढ़ा ने लिखा है सामाजिक जीवन के उपन्यास का उद्देश्य जीवन को सामाजिक दृष्टि से देखना है जीवन का विवेचन विश्लेषण सामाजिक दृष्टि से करना है व्यक्ति सत्य को सामाजिक सत्य में देखना है और जीवन मूल्यों की स्थापना समाज के माध्यम से करना है। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यासों को वास्तविकता की जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया है। उन्होंने नारी जीवन की दयनीयता मध्यम वर्ग की विडंबना, अंधविश्वास, रीति रिवाज, आदि पर मानवीय संवेदना को गहरे रूप से व्यंजित किया है। उनके उपन्यासों में किसान, महाजन, वकील, जमींदार, राजे महाराजे, बुद्धिजीवी यानी समाज के सभी वर्गों और स्तरों के लोग मिलते हैं। सेवा सदन की मानवीय संवेदना नारी जीवन को लेकर अनेक रूपों में मुखरित हुई है। वेश्या जीवन को माध्यम रखकर नारी पीड़ा संवेदित है। जैनेंद्र की संवेदना और चिंतन में तनाव और खिंचाव की स्थिति है जो उनकी रचना प्रक्रिया को संचालित करती है। सुनीता रात के समय सुनसान जंगल में हरी प्रसन्न के सामने निरावरण होकर भी स्वयं को श्रीकांत की पत्नी मानती है। पति के लिए तन और प्रेमी के लिए मन देने की समस्या नारी को

तनाव की स्थिति में डाल देती है। मनोविश्लेषणवादी मे संवेदना बहिर्जगत की अपेक्षा अतर जगत को लेकर है। व्यक्ति की वासना, कुंठा, आकांक्षा, यौन जीवन, नैतिक मूल्य, आदि पर जिक्र किया गया है।

हिंदी साहित्य में संवेदना व्यक्तिपरक हो या सामाजिक, मनोविश्लेषणवादी हो या प्रगतिशील अथवा ऐतिहासिक या आंचलिक, सभी प्रकार के साहित्य में मानवीय संवेदना कम या अधिक मात्रा में मिलती है। किसी में पाठकीय संवेदना के दर्शन होते हैं तो किसी में लेखकीय संवेदना के सामाजिक समस्याओं के प्रति कोई अपना हृदयगत भाव प्रदर्शित करता है, तो कोई व्यक्तिगत जीवन की अनुभूति को खोलकर रख देता है। मनोगत कौन था वह की अभिव्यक्ति ज्यादा मिलती है। इस प्रकार हिंदी साहित्य में मानवीय संवेदना अनेक आयामों को लेकर प्रस्तुत हुई है।

संदर्भ सूची :

1. दीक्षित, डॉ.आनंद प्रकाश- संवेदना और संचेतना
2. मटियानी, शैलेश- लेखक और संवेदना, विभा प्रकाशन इलाहाबाद
3. अज्ञेय- हिंदी साहित्य: एक आधुनिक परिदृश्य
4. जायसवाल, डॉ.अमर प्रसाद- हिंदी उपन्यासों का वर्गगत अध्ययन
5. मोढा, डॉ.महावीर प्रसादमल, हिंदी उपन्यास: शास्त्रीय विवेचन